BA PART–I (Hons.) & (Sub.), Paper- I

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

स्वतन्त्रता (Liberty)

स्वतन्त्रता व्यक्ति के विकास का आधार है। बिना स्वतंत्रता के व्यक्ति, व्यक्ति नहीं रह जाता। अतः स्वतंत्रता के लबादे में लिपटा हुआ प्राणी ही मानव है और स्वतंत्रता का यह चादर उतर जाने के बाद वह मानवता खो बैठता है। शायद इसी कारण मैजिनी ने कहा है कि, "स्वतंत्रता के आभाव में आप अपना कोई कार्य पूरा नहीं कर सकते हैं। अतएव आपको स्वतंत्रता का अधिकार दिया जाता है और जो भी शक्ति आपको इस अधिकार से वंचित रखना चाहती हो, उससे जैसे भी बने, अपनी स्वतंत्रता छीन लेना आपका कर्त्तव्य है।" आधुनिक युग में जिस स्वतंत्रता का प्रयोग किया जाता है वह फ्रांस की क्रांति की देन है। इस क्रांति की तीन प्रवृतियॉ स्वतंत्रता, समानता और भातृत्व में स्वतंत्रता सबसे महत्वपूर्ण है।

स्वतंत्रता का अर्थ तथा परिभाषा – स्वतन्त्रता अंग्रेजी शब्द Liberty (लिबर्टी) का अनुवाद है। यह लैटिन भाषा के "लिबर" (Liber) से निकला है, जिसका अर्थ होता है – "बंधनों का अभाव।" स्वतन्त्रता की अवधारणा की व्याख्या में विचारकों के अपने–अपने दृष्टिकोण हैं। स्वतंत्रता के दो अर्थ लगाये जाते हैं – (क) नकारात्मक और (ख) सकारात्मक।

(क) **स्वतन्त्रता की नकारात्मक अवधारणा** – उत्पत्ति के विचार से "बंधनों का अभाव" अर्थात् व्यक्ति के कार्यो पर किसी प्रकार का बंधन न हो, वह पूर्णरूप से अपने कार्यो को करने के लिए स्वतंत्र हो। सामाजिक समझौता सिद्वांत के समर्थक हाब्स और रूसो के मतानुसार प्राकृतिक अवस्था में इस प्रकार की स्वतंत्रता थी। मनुष्य स्वछन्द रूप से जीवन व्यतीत करता था। इसके समर्थन करने वालों में मिल, बर्लिन, क्रेसटन आदि हैं। रूसो ने कहा है कि – "मनुष्य स्वतंत्र पैदा लेता है परन्तु वह सर्वत्र बंधनों से जकड़ा हुआ है।"

(ख) **स्वतंत्रता की सकारात्मक अवधारणा** – नकारात्मक अवधारणा को वर्त्तमान समाज में स्वीकार नहीं किया जाता, क्योंकि यह व्यक्ति को अनावश्यक कार्यो के लिए बढ़ावा देती है। गैटल के अनुसार, "स्वतन्त्रता के समाज में नकारात्मक रूप ही नहीं, बल्कि सकारात्मक स्वरूप भी है।" ग्रीन के अनुसार, "जिस प्रकार सौन्दर्य कुरूपता के अभाव का नाम नहीं होता, उसी प्रकार स्वतंत्रता प्रतिबंधों का अभाव नहीं है।"

इन विचारकों का मानना है कि व्यक्ति के ऊपर सामाजिक बंधन आवश्यक है अर्थात् वह मनमानी करने हेतु स्वतंत्र नहीं है। व्यक्ति को उसी सीमा तक स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है जहॉ तक वह दूसरों को हानि न पहुॅचाए। अगर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के कार्यो में अनावश्यक दखल करता है, तो उस पर प्रतिबंध लगाने चाहिए। सकारात्मक स्वतंत्रता की धारणा में समाजिकता का तत्व निहित है। स्वतंत्रता के इसी रूप को आज स्वीकार कर लिया गया है। वास्तविकता में स्वतंत्रता का अभिप्राय उन अधिकारों तथा उन अवसरों से है, जो नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। अतः स्वतंत्रता का रूप नकारात्मक न होकर स्वीकारात्मक है। इसका अर्थ बंधनों का अभाव नहीं वरन् सामाजिक बंधनो से जकड़ा रहना है।

स्वतन्त्रता की परिभाषाएँ (Definition of Liberty)

हरबर्ट स्पेन्सर – "प्रत्येक मनुष्य वह करने को स्वतंत्र है जिसे वह करने की इच्छा करता है, यदि वह किसी दूसरे मनुष्य की समान स्वतंत्रता का हनन नहीं करता हो।"

लास्की – "स्वतंत्रता उन सामाजिक दशाओं के ऊपर नियंत्रण का अभाव है जो कि आधुनिक सभ्यता में व्यक्ति के सुख के लिए आवश्यक है।"

ग्रीन – "स्वतंत्रता उन कार्यो को करने या बंधनों के उपयोग करने की शक्ति है, जो करने तथा उपभोग करने योग्य है।"

मैकेंजी – स्वतंत्रता सभी प्रकार के प्रतिबंधों के अभाव को नहीं, अपितु अनुचित प्रतिबंधो के स्थान पर उचित प्रतिबधों की व्यवस्था है।"

बोसांके – "स्वतंत्रता अन्य व्यक्ति द्वारा दमन शक्ति का अभाव है।"

स्वतंत्रता के विभिन्न प्रकार

1. **प्राकृतिक स्वतन्त्रता** – प्राकृतिक स्वतंत्रता के पक्षधर विचारकों के अनुसार मनुष्य प्रकृति से ही स्वतंत्र है। रूसो के अनुसार, "मनुष्य जन्म से स्वतंत्र उत्पन्न होता है परन्तु बाद में वह जंजीरों से जकड़ा हुआ पाया जाता है।" उसके अनुसार मनुष्य वास्तविक स्वतन्त्रता का प्रयोग तो प्राकृतिक अवस्था में ही करता था, परन्तु प्राकृतिक स्वतंत्रता अराजकता का द्योतक है। फिर भी जनतांत्रिक आन्दोलनों जैसे फ्रांस की राज्यक्रांति में मनुष्य के अधिकारों की घोषणा, स्वतंत्रता और समानता के प्राकृतिक अधिकारों के आधार पर ही की गई। सकारात्मक दृष्टि से इसमें यह तत्व निहित है कि, "स्वतंत्रता मनुष्य का स्वभाविक गुण है।"

2. **सामाजिक स्वतंत्रता –**

(i) **व्यक्तिगत स्वतंत्रता** – (A) व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार अपने जीवन को नियोजित, अपने शक्तियों के उपभोग तथा विकास कर सके। (B) स्वास्थ, व्यक्तित्व एवं सम्मान की सुरक्षा (C) विचार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (D) घूमना फिरना (E) व्यक्ति अपने निजी सम्पत्ति का अर्जन, रखना, हटाना तथा उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हो। किसी भी धर्म को अपनाने की स्वतंत्रता भी इसमें शामिल हो।

(ii) **राजनीतिक तथा नागरिक स्वतंत्रता** – (A) इसका अभिप्राय उन अधिकारों से है जिसमें नागरिकों को राज्य के शासन कार्य में भाग लेने का अवसर मिलता हो। (B) मताधिकार का प्रयोग (C) स्वतंत्रता और निष्पक्षता से चुनावों में भाग लेना (D) सरकार को याचिका भेजना (E) सूचना अथवा समाचार जानना सरकारी कार्यो या नीतियों की प्रशंसा या आलोचना करना यह स्वतंत्रता केवल जनतंत्र में ही संभव है। इसलिए गिलक्राइस्ट ने राजनीतिक स्वतंत्रता को लोकतंत्र का ही दूसरा नाम दिया है।

(iii) **आर्थिक स्वतंत्रता** –(A) अपने आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए रोजगार पाना (B) वस्तुओं का उत्पादन एवं वितरण करना (C) उधोगों के प्रबंध में मजदूरों द्वारा भाग लेना (D) अभाव के खिलाफ स्वतंत्रता (E) औधोगिक लोकतंत्र प्राप्त होना।

(iv) **घरेलू स्वतंत्रता** –(A) पत्नी व बच्चों की जिम्मेदार एवं सम्मानपूर्वक स्थिति (B) वैज्ञानिक संबंधों की स्वतंत्रता (C) परिवार के सदस्यों के मानसिक व नैतिक विकास के लिए माता–पिता का दायित्व।

(v) **राष्ट्रीय स्वतंत्रता** – –(A) देश की आजादी अथवा मुक्ति की स्वतंत्रता (B) देश भक्ति के लिए प्रदर्शन तथा निष्ठा की स्वतंत्रता का होना।

(vi) **अन्तराष्ट्रीय स्वतंत्रता** –(A) युद्व के परित्याग की स्वतंत्रता (B) बल प्रयोग को छोड़ने की स्वतंत्रता (C) राष्ट्रों के बीच विवादों का शांतिपूर्ण ढ़ग से निपटारा करने की स्वतंत्रता (D) युद्व साम्रगी के उत्पादन पर रोक की स्वतंत्रता।

3. **नैतिक स्वतंत्रता** – यह सभी स्वतंत्रता का मूल है। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्त्वि के उत्तम विकास के लिए तथा दूसरों के वास्तविक मूल्य और गरिमा के प्रति सच्चा सम्मान भाव रखने के लिए स्वतंत्र हो अर्थात् विवेकशील ईच्छा की स्वतंत्रता हो, जिससे वह व्यक्त्वि का उत्तम विकास कर सके। नैतिक स्वतंत्रता का अभिप्राय समाज में सद्व्यवहार, शिष्टाचार, सहयोग और सहानुभूति की भावना से है। चाणक्य ने भी नैतिक बल पर जोर दिया है, जिसके अभाव में जनता वास्तविक स्वतंत्रता का उपयोग नहीं कर सकती।

□